जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

चूरू

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 वर्षः 15 संख्याः 232 प्रभात चूरू, बुधवार 20 दिसम्बर, 2023 पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

अंटार्कटिका में बर्ड फ्लू फैल रहा है सैंकड़ों की तादाद में एलिफैंट सील मृत पाई गई हैं। वैज्ञानिकों को आशंका है कि अगर यह वायरस पैनग्विन तक पहुंच गया तो यह आधुनिक काल का सबसे बड़ा पर्यावरण विनाश साबित हो सकता है। सबसे पहले यह वायरस बर्ड आइलैंड में रहने वाले ब्राउन स्कूआ पक्षियों में मिला था। उसके बाद वैज्ञानिकों ने एलिफैंट सील की सामुहिक मौत की जानकारी दी, साथ ही फर सील केल्प गल्स और ब्राउन स्कूआ के मरने की खबर भी मिली। साउथ जॉर्जिया से पश्चिम में 900 मील दूर फॉकलैंड आइलैंड में फुलमर पक्षी के मरने की भी खबरें मिली हैं। अंटार्कटिक वाइल्डलाइफ हैल्थ नैटवर्क की अध्यक्ष डॉ. मीगन डेवार ने बताया कि सदर्न एलिफैंट सील की हालत बहुत खराब है, कई जगहों पर सौ से ज्यादा मृत सील मिली हैं और यह बर्ड फ्लू के कारण हो सकता है। शोधकर्ताओं ने बताया कि कई सील में बर्ड फ्लू के संकेत मिले हैं और कई जगहों के टैस्ट होने बाकी हैं। अभी तक अंटार्कटिक मेनलैंड में बर्ड फ्लू का कोई केस रिकॉर्ड नहीं हुआ है। पर आगामी महीनों में यहां तक यह रोग पहुंचने की संभावना है। भारी भरकम 8800 पाउण्ड वजनी एलिफैंट सील समंदर के सबसे बड़े परभक्षी जीवों में से एक है। इन्हें यह नाम इनके आकार के कारण नहीं मिला है बल्कि नर सील में सूंड जैसी सरंचना के कारण मिला है, इससे वे तेज आवाजें करते हैं, खासकर प्रजनन काल में। एलिफैंट सील का पूर्व काल में तेल के लिए जमकर शिकार किया गया जिससे वे लुप्त हो गईं। बाद में कानूनी संरक्षण मिलने से इनकी आबादी फिर बढ़ी। अभी इनकी आबादी कई खतरों से जूझ रही है और बर्ड फ्लू ने इन खतरों को और बढ़ा दिया।

आखिरकार ए.आई.सी.सी. में पद हासिल कर ही लिया गहलोत ने

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने गहलोत को राष्ट्रीय गठबंधन समिति का सदस्य बनाया है

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 दिसम्बर। यह एक ऐसा कदम है जो इस बात के स्पष्ट संकेत देता है कि कांग्रेस लोकसभा चुनावों तक अपने सीनियर नेताओं को साथ रखना चाहती है। वर्ष 2024 के लोकसभा चुनावों से पहले एक राष्ट्रीय गठबंधन समिति गठित की गई है जिसमें अशोक गहलोत को सदस्य बनाया गया है। कमेटी का समन्वयक मुकुल वासनिक को बनाया गया है। इसके अन्य सदस्य हैं- भूपेश बघेल, सलमान खुर्शीद और मोहन प्रकाश। कमेटी अगले चार महीनों का कुछ समय के लिए है। यह अन्य पार्टियों के साथ मीट शेयरिंग पर विचार-विमर्श करेगी और इस पर भी गठबंधन के मुद्दे पर समन्वय कैसे बिठाया जाए।

- हालांकि खड़गे जानते हैं कि गांधी परिवार गहलोत को पसंद नहीं करता है, पर गहलोत खड़गे की ''गुड बुक'' में हैं।
- चार माह के लिए गठित कमेटी के अध्यक्ष हैं मुकुल वासनिक तथा गहलोत के अलावा भूपेश बघेल, सलमान खुर्शीद व मोहन प्रकाश इसके सदस्य हैं।
- राजस्थान में सत्ता खोने के बाद गहलोत येन-केन-प्रकारेण ए.आई.सी.सी. में पद पाना चाहते थे, ताकि वे दिखा सकें कि वे अब भी पार्टी में ताकतवर हैं।
- लोकसभा चुनावों में अब ज्यादा समय नहीं है, अतः चर्चा है कि गहलोत को राजस्थान से दूर रखा जा सकता है और सचिन पायलट को प्रदेश में पार्टी की जिम्मेवारी सौंपी जा सकती है।

मज़ेदार बात यह है कि गहलोत को कमेटी में शामिल करने का निर्णय मल्लिकार्जुन खड़गे ने लिया है जो इस तथ्य के बावजूद उनका समर्थन करते रहे हैं कि गांधी परिवार के सदस्यों का नज़रिया राजस्थान के इस पूर्व मुख्यमंत्री के प्रति अच्छा नहीं है।

राजस्थान में सत्ता खोने के बाद ए.आई.सी.सी. में कोई पद प्राप्त करने के लिए व्याकुल हैं। इससे वह यह मैसेज देना चाहते हैं कि वह अब भी पहले के जैसे मजबूत नेता हैं।

यह जानना दिलचस्प होगा कि क्या गहलोत आगे ए.आई.सी.सी. में कोई पद प्राप्त करेंगे या कमेटी में उनका आना सिर्फ लोकसभा चुनावों तक ही है। प्रश्न यह भी है कि सचिन पायलट को कहां समायोजित किया जाएगा। राज्य में या केन्द्र में।

चूंकि लोकसभा चुनावों में अब थोड़ा ही समय शेष है, इसलिए यदि गहलोत को राजस्थान की राजनीति से दूर रखा जाए एवं यहां उनका हस्तक्षेप ना हो तो सचिन पायलट जैसा युवा एवं

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

खड़गे को प्रधानमंत्री पद का प्रत्याशी बनाने का प्रस्ताव रखा ममता बनर्जी ने

इंडिया गठबंधन की बैठक में ममता बनर्जी ने खेला चतुर दांव, केजरीवाल ने किया समर्थन

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 दिसम्बर। एक बहुत ही चतुराई भरा कदम उठाते हुए पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री व तृणमूल कांग्रेस (टी.एम.सी.) की अध्यक्ष ममता बनर्जी एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल ने आज विपक्ष के इंडिया गठबंधन की तरफ से प्रधानमंत्री पद के दावेदार के रूप में कांग्रेस के मल्लिकार्जुन खड़गे के नाम का प्रस्ताव कर दिया। इस प्रस्ताव को कांग्रेस के अध्यक्ष खड़गे ने बहुत विनम्रता के साथ यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि सर्वप्रथम चुनाव जीतना ज्यादा महत्वपूर्ण है और उसके बाद हर एक बात का निर्णय बाद मे कर लिया जाएगा।

समूहों की बैठक के बाद मीडिया से बात करते हुए एम.डी.एम.के. नेता वायको ने कहा कि बैठक में खड़गे के नाम पर प्रस्ताव विपक्ष के चेहरे के रूप में रखा गया था परन्तु इस मसले पर कोई फैसला नहीं लिया गया क्योंकि पहले दूसरे महत्वपूर्ण मुद्दों का समाधान किया जाना जरूरी है।

- कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने विनम्रता से प्रस्ताव अस्वीकार किया, मल्लिकार्जुन खड़गे ने साफ कहा कि, पहले चुनाव जीतने पर फोकस कीजिए बाकी बातों पर बाद में विचार करेंगे।
- ममता बनर्जी के इस प्रस्ताव को मीडिया ने हाथों हाथ लपक लिया और मीडिया इसे राहुल गांधी के लिए झटका बता रहा है।
- इंडिया गठबंधन की बैठक में सोनिया गांधी, राहुल गांधी, शरद पवार, नीतीश, स्टालिन, केजरीवाल और ममता बनर्जी सहित सभी बड़े नेता मौजूद थे।

दिल्ली में आयोजित 28 विपक्षी दलों के नेताओं की बैठक में देश के प्रथम दलित प्रधानमंत्री के रूप में खड़गे के नाम का प्रस्ताव रख दिए जाने के बाद, खड़गे ने कहा, ''मैं दलितों और वंचितों के लिए काम करता हूँ। पहले हम चुनाव जीतें उसके बाद हम इस बारे में विचार करेंगे। मुझे कुछ नहीं चाहिए।''

खड़गे से जब पूछा गया कि, क्या वे विपक्षी गठबंधन की तरफ से पी.एम. पद के उम्मीदवार हो सकते हैं, उन्होंने कहा कि ''सर्वप्रथम हमें चुनावों में विजय प्राप्त करनी और बहुमत प्राप्त करना है और सांसद इस बात का फैसला लोकतांत्रिक तरीके से करेंगे।''

खड़गे ने कहा कि इंडिया गठबंधन की पार्टियां राज्य स्तर पर सीटों के आपसी बंटवारे को लेकर चर्चा करेंगी और सम्पूर्ण देश में सार्वजनिक रूप से सभाएं करेंगी। उन्होंने इस बात को जोर देकर कहा कि प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के बारे में निर्णय आम चुनावों के पश्चात् ही किया जाएगा।

कांग्रेस अध्यक्ष ने यह भी कहा कि इंडिया गठबंधन के दलों ने एक संकल्प पारित किया है जिसमें लोकसभा व राज्यसभा में विपक्षी दलों के सांसदों को निलम्बित किए जाने के फैसले की भर्त्सना की गई है और इस मामले को लेकर 22 दिसम्बर को भी विरोध प्रदर्शन करने का निर्णय लिया गया है।

बनर्जी ने सोमवार को राष्ट्रीय राजधानी में आने के बाद संवाददाताओं से बात करते हुए कहा था कि, गठबंधन

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विपक्ष मुक्त लोकसभा

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 दिसम्बर। कांग्रेस सांसद शशि थरूर, जो लोकसभा से निलम्बित किए गए 49 सांसदों में से एक हैं, ने किया कि, ''यह बात साफ हो गई है कि भाजपा विपक्ष मुक्त लोकसभा चाहती है और वह राज्यसभा में भी कुछ हद तक ऐसा ही करने वाली है।''

- लोकसभा से आज 49 विपक्षी सदस्यों को निलम्बित किया गया, निलम्बित होने वाले सांसदों में शामिल शशि थरूर ने कहा कि, भाजपा विपक्ष मुक्त लोकसभा चाहती है। हमें संसदीय लोकतंत्र का शोक संदेश लिखना शुरू कर देना चाहिए।

''दुर्भाग्यवश, हमें भारत में संसदीय लोकतंत्र के ऊपर शोक संदेश लिखना शुरू कर देना चाहिए'', थरूर ने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

तेलंगाना के बाद अब कांग्रेस का फोकस आंध्र प्रदेश पर

कांग्रेस की बढ़ती सक्रियता से जगन मोहन व चन्द्रबाबू की बेचैनी बढ़ने लगी है

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 दिसम्बर। तेलंगाना में जीत के बाद कांग्रेस की निगाहें एकमात्र अन्य तेलुगु भाषी राज्य आंध्र प्रदेश पर है, क्योंकि यही पर वह अपना पुनरुत्थान कर सकती है। अन्य राज्यों के लिए तो उसके लिए सोचना भी असंभव है।

आंध्र प्रदेश के विभाजन के बाद यहां कांग्रेस बिल्कुल शून्य पर आ गई थी क्योंकि यहां दो पार्टियों- तेलुगु देसम पार्टी और वर्तमान में सत्तारूढ़ प्रवजन श्रमिक रायतू कांग्रेस पार्टी (वाय.एस.आर.सी.पी.) कांग्रेस को एक ऐसी खराब पार्टी के रूप में चित्रित किया जिसने राज्य का विभाजन किया है, जिससे वर्ष 2014 के बाद से आंध्र प्रदेश अप्रासंगिक बनकर रह गया।

यहां कांग्रेस के अधिकांश नेता पार्टी छोड़कर वाय.एस.आर.सी.पी. में शामिल हो गए थे। और कुछ अन्य ने टी.डी.पी. का रुख किया था उसके बाद कांग्रेस में वे ही लोग शेष रहे जो पार्टी के प्रति बेहद निष्ठावान थे। आंध्र प्रदेश कांग्रेस का पुराना गढ़ रहा है और यहां के प्रत्येक गांव में कांग्रेस के समर्थक आज भी मौजूद हैं। तेलंगाना के चुनाव परिणामों के बाद क्या आंध्र प्रदेश में

- दक्षिण भारत में कांग्रेस की ताकत बढ़ी है और यहां आंध्र प्रदेश ही ऐसा राज्य है जहां पार्टी सत्ता पाने के बारे में सोच सकती है।
- वर्ष 2014 के बाद आंध्र में कांग्रेस शक्तिहीन हो गई थी, कांग्रेस के नेता भी भारी तादाद में जगन मोहन रेड्डी की पार्टी में शामिल हो गए थे।
- आंध्र कभी कांग्रेस का गढ़ हुआ करता था। यहां के गांवों में अब भी कांग्रेस समर्थक हैं। तेलंगाना के नतीजों ने प्रदेश में भी कांग्रेस को उत्साहित कर दिया है, यही बात जगन मोहन की चिंता बढ़ा रही है।
- लोकसभा चुनावों की दृष्टि से आंध्र प्रदेश महत्वपूर्ण है। यहां 25 लोकसभा सीटें हैं, अभी 23 सीटें जगन मोहन रेड्डी की पार्टी के पास है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

आडवाणी व जोशी को अयोध्या आने का निमंत्रण

नयी दिल्ली, 19 दिसंबर। अयोध्या में 22 जनवरी 2024 को श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में रामलला के नवीन विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी और डॉ मुरली मनोहर जोशी को आमंत्रित किया गया है।

- विश्व हिन्दू परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार ने दोनों नेताओं से मुलाकात कर उन्हें निमंत्रण दिया। हालांकि पहले चर्चा थी कि उन्हें नहीं बुलाया जाएगा।

विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार ने दोनों वरिष्ठ नेताओं से भेंट करके उन्हें अयोध्या आने का निमंत्रण दिया। दोनों नेताओं ने कार्यक्रम में आने का पूरा प्रयास करने की बात कही है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

आखिर क्यों खड़गे का नाम प्रस्तावित किया ममता बनर्जी ने?

क्या वे इंडिया गठबंधन को खत्म करना चाहती हैं

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 दिसम्बर। ममता बनर्जी ने इंडिया गठबंधन की बैठक में गठबंधन को नष्ट करने के लिए एक दांव खेला है अनुमान है कि इस कारगुजारी की रिपोर्ट उन्हें प्रधानमंत्री को देनी है, जिनसे वे बुधवार को मुलाकात करेगी।

बंगाल के वामपंथी नेता जैसे सुजन चक्रवर्ती, जो ममता बनर्जी के तौर तरीकों से परिचित है, उनका मत है कि ममता बनर्जी इंडिया गठबंधन के बारे में भ्रम फैलाना चाहती है, उन्होंने कहा पहले उन्होंने अपना नाम चलाया फिर अखिलेश यादव का नाम लिया और अब खड़गे का नाम ले रही है।

प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी के बारे में समय से पहले चर्चा करके वो आदतन गड़बड़ी पैदा कर रही हैं।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे का नाम इंडिया गठबंधन की तरफ से प्रधानमंत्री के चेहरे के रुप में उछालकर वे अपने चिर प्रतिद्वंद्वी राहुल गांधी को सत्ता की दौड़ से हटा देना चाहती है।

कांग्रेस में गांधी सरनेम को पार्टी के कार्यकर्ताओं व नेताओं का पूर्ण समर्थन मिल सकता है। ममता बनर्जी पुरानी कांग्रेसी है और इस सच को अच्छे से जानती हैं।

विडम्बना है कि खड़गे ने इस बात का उसी जगह खत्म करने की भरसक कोशिश की। उन्होंने इसे हल्का करने का प्रयास किया और कहा पहले चुनाव जीतने पर फोकस किया जाए उसके बाद नेतृत्व का मुद्दा हल किया जाएगा।

खड़गे ने कहा कि सीटों के बंटवारे पर 31 दिसम्बर तक निर्णय कर लिया जाएगा। उन्होंने इसके लिए जिन राज्यों का उल्लेख किया उनमें बंगाल का नाम नहीं लिया। बंगाल के कांग्रेस नेताओं का कहना है कि राज्य में तृणमूल कांग्रेस से कोई समझौता नहीं होगा।

- ममता के तौर तरीकों से वाकिफ बंगाल के वामपंथी नेता कहते हैं कि ममता की रणनीति भ्रम पैदा करने की है, तभी तो पहले उन्होंने खुद का नाम चलाया, फिर अखिलेश यादव का और अब खड़गे का।
- सूत्रों का कहना है कि, ऐसा करके वे राहुल गांधी को भी झटका देना चाहती हैं, जिन्हें वे जरा भी पसंद नहीं करती हैं।
- यह भी चर्चा है कि, ममता बनर्जी ने नेतृत्व का मुद्दा उठाकर गठबंधन निर्माण की प्रक्रिया को भारी नुकसान पहुंचाया है।
- राजनैतिक हल्कों में कहा जा रहा है कि ऐसा उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी के इशारे पर किया है, जिनसे वे बुधवार को मुलाकात करने जा रही हैं और उन्हें अपने इस कारनामे की रिपोर्ट भी देंगी।

महत्वपूर्ण बात यह है कि ममता बनर्जी मीटिंग खत्म होने से पहले ही चली गई थी वे प्रैस कॉन्फ्रैंस में भी नज़र नहीं आईं।

इसके साथ ही ममता बनर्जी ने ''इण्डिया'' गठबंधन के नेताओं के बीच इतनी कटुता पैदा कर दी है कि वे आपस में कोई भी समझ निर्मित नहीं कर पा रहे हैं। समाजवादी पार्टी (सपा) नेता अखिलेश यादव खड़गे के नाम को पहले ही खारिज कर चुके हैं।

नीतीश कुमार को इण्डिया गठबंधन की ओर से प्रधानमंत्री पद का प्रत्याशी बनाने की मांग पटना में जोरों पर थी। सी.पी.आई. (एम) नेता सीताराम येचुरी ने खड़गे को प्रधानमंत्री पद का चेहरा बनाने के किसी भी प्रश्न पर कोई उत्तर नहीं दिया।

संक्षेप में, ममता बनर्जी ने तप मापदंडों पर ''इण्डिया'' गठबंधन की वार्ताएं शुरु होने से पहले ही नेता का नाम फाइनल कर पूरे गठबंधन की प्रक्रिया को दूषित कर दिया है।

दूसरी ओर, पश्चिम बंगाल में कांग्रेस के एक समर्थक की हत्या के मामले में कांग्रेस और तृणमूल कांग्रेस के संबंध निम्न स्तर पर पहुंच चुके हैं। कांग्रेस की शिकायत है कि उसके

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'जमानत याचिकाओं में परिवादी या पीड़ित को पक्षकार बनाना जरूरी नहीं'

जयपुर, 19 दिसम्बर (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट की खंडपीठ ने एकलपीठ की ओर से भेजे गए रेफरेंस को तय करते हुए कहा है कि सभी तरह की जमानत याचिकाओं में परिवादी या पीड़ित को पक्षकार बनाना जरूरी नहीं है। जस्टिस अरुण भंसाली व पंकज भंडारी की खंडपीठ ने यह आदेश पूजा गुर्जर व अन्य की जमानत याचिकाओं पर भेजे गए रेफरेंस को तय करते हुए दिया। खंडपीठ ने अपने आदेश में कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने शिकायतकर्ता व

- राजस्थान हाई कोर्ट की खंडपीठ ने कहा कि, सुप्रीम कोर्ट ने शिकायतकर्ता व पीड़ित को सुनवाई का मौका देने को कहा है, पर इसका अर्थ यह नहीं है कि, उन्हें जमानत याचिका में पक्षकार बनाया जाए।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)